भादरा-राज.। माननीय मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे को मुलाकात के दौरान गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. चन्द्रकान्ता। साथ हैं ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

भवानीगढ़-पंजाब। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में विधायक विजेन्द्र सिंगला, प्रसिद्ध मुनि निराले बाबा जी, ब्र.कु. राजिन्दर बहन, ब्र.कु. निशा तथा अन्य।

अलीगढ़-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारी पाठशाला में आयोजित 'कर्मों का ऑडिट' कार्यक्रम में चार्ट्र्ड एकाउन्टेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अवन कुमार सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कमलेश तथा ब्र.कु. छोटे लाल,माउण्ट आबू। साथ हैं अलीगढ़ मण्डल के आयकर आयुक्त सुनील वाजपेयी, एडवोकेट मुकेश शर्मा तथा अन्य।

भंगरोटू-मण्डी(हि.प्र.)। सेवाकेन्द्र की 21वीं वर्षगांठ पर आयोजित शोभायात्रा को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए व्यापार मण्डल के प्रधान अमृतपाल जी, ब्र.कु. अमीर चन्द, ब्र.कु. शीला तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

फिल्लौर-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर नवयुग संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. तुलसी का स्वागत करते हुए संस्था के सदस्य।

भवानीमण्डी-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए शिव शंकर सोनी,आयुर्वेदिक चिकित्सक, प्रमोद कुमार, कानुनगो, ब्र.कु. निशा, ब्र.कु. गायत्री तथा अन्य।

स्व+तंत्र

मनुष्य का जीवन प्राचीन काल से ही स्वतंत्र रहा है। मानवता कभी भी परतंत्रता को स्वीकार नहीं करती है। ये हम सभी का स्वयं का अनुभव भी है। लेकिन हमारी स्वयं की उलझनें, स्वयं के प्रति हमारा स्वयं का दृष्टिकोण हमें उन परतंत्रता की जंजीरों में जकड़ रहा है जो कहीं न कहीं हमारी स्वयं की खुशी और स्वतंत्रता को गायब कर रही है। विकारों की बेड़ियाँ हमारे जीवन को ऐसे बांधे हुए हैं, कि कोई भी आंतरिक व बाह्य औजार उसे खोल नहीं पा रहा है।

मनुष्य का शरीर पंचतत्वों से निर्मित है। इन पंचतत्वों में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश के मिलने से पहले हमारे अंदर पृथ्वी का सबसे सूक्ष्मतम कण जिसे हम परमाणु कहते हैं, दो या दो से अधिक परमाणुओं के मिलने से अणु बनता है। अणु जब अपनी क्रियाशीलता में आता है, तो वो एक मिश्रण के रूप में हमारे शरीर में काम करता है। मिश्रण से कोशिकाओं का निर्माण होता है। इन कोशिकाओं के सम्मिलन से हमारे उत्तक (टिसूज़) बनते हैं। इन उत्तकों के एक साथ सम्मिलन से अंग बनता है, और इन अंगों के सम्मिलन से तंत्र का निर्माण होता है। हमारे शरीर में सात तंत्र हैं, जिसमें क्रमश: कंकाल तंत्र, श्वसन तंत्र, परिसंचरण तंत्र आदि आदि हैं। इन तंत्रों का संतुलन हमारे शरीर के सबसे ऊपरी हिस्से मस्तिष्क के द्वारा होता है, या जिसे हम कंट्रोल रूम भी कह सकते हैं, वहाँ से होता है। अगर उसमें से एक भी न्यूरॉन, एक भी सेल, एक भी टिसू इधर उधर हो जाए तो शरीर में कोई न कोई हलचल शुरू हो जाती है। मनुष्य हमेशा इस बात से अनभिज्ञ रहता है कि हम कैसे बीमार हो जाते हैं। क्योंकि मस्तिष्क को भी चलाने वाली शक्ति जो तीन ग्लैंड के बीच में स्थित है, जिसको हम मेटा फिज़िकल एनर्जी या पराभौतिक ऊर्जा कहते हैं, उसके द्वारा होता है। दरअसल वही 'स्व' है, जिसको स्व कहो या ऊर्जा कहो या आत्मा कहो, या रूह कहो, स्व वही है। वही स्व इस तंत्र को चलाती है अपने विचार शक्ति के माध्यम से।

उदाहरण के रूप में जैसे हमारा लोकतंत्र है, जो मुख्य नियंत्रक है हमारे देश के विधान का, कानून का, समाज का, राज्य का, लेकिन वो कार्य अच्छी तरह से तभी कर सकता है जब राज्य के प्रतिनिधि अच्छी तरह से अपनी एक-एक ज़िम्मेवारियों को निभायें और उसकी सारी सूचना मुख्य नियंत्रक को दें, तभी व्यवस्था सुचारू रूप से चल सकती है या आगे बढ़ सकती है। वैसे ही हमारे शरीर का तंत्र है, जिसमें आत्मा मुख्य है, या स्व मुख्य है। उसके साथ सम्मिलित शक्तियों में मन बुद्धि संस्कार है। अगर ये तीनों सही रूप से कार्य करते हैं, और उसकी सूचना आत्मा को पहुँचती है, या स्व को पहुँचती है तो वो अच्छी तरह से अपने तंत्र को नियंत्रण में रख सकता है। लेकिन सहयोगियों अर्थात मन बुद्धि संस्कार के अंदर कुछ बाहरी शक्तियों ने आक्रमण कर दिया है, जिसे हम कहते हैं विकार। ये हमारे इंद्रिय रूपी दलालों के माध्यम से हमारे राज्य में प्रवेश करते हैं, और धीरे-धीरे अपना तबका खुद उस राज्य के ऊपर करते जाते हैं। जैसे आकर्षण, बाहरी दिखावा, लोभ, लालच, मोह आदि आदि घुसपैठिये हमारे अंदर इंद्रियों के माध्यम से आते रहे, और हम उसकी जंजीरों में जकड़ते चले गए। आज आलम यह है कि हमारा जो स्व है या आत्मा है, वो पूरी तरह से तंत्र के वशीभूत है, इसका मतलब है कि मन बुद्धि संस्कार के वश हम सभी आज इतने ज़्यादा हैं कि हमसे गलत काम ही हो रहे हैं। इस चंगुल से छूटने के लिए हम सभी को कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है। कोई ऐसा देशभक्त, क्रान्तिकारी पैदा हो, जो हमें इन विकारों से छुड़ा दे, इनसे हमें आज़ाद करा दे। आपको यह जानकर खुशी तो होती ही है कि भारत पंद्रह अगस्त 1947 को आज़ाद हुआ, लेकिन भारत में रहने वाले लोग क्या आज़ाद हैं! हमें तो शायद नहीं लगता। हम सभी 70वीं स्वतंत्रता दिवस के वर्षगांठ की ओर बढ़ रहे हैं। इतने सालों का अनुभव लेने के बावजूद भी हम बदले नहीं, बदला लेने के चक्कर में रहते हैं।

इस उहापोह के दौर में एक महापरिवर्तक, विश्व रक्षक भी 1937 में इस धरा पर आया, और अभी भी है, जो अहिंसक है, परम कल्याणकारी है, परम हितैषी है, जो जातिवाद, धर्मवाद सबसे परे है। जो सच्ची स्वतंत्रता दिलाने हेतु प्रयासरत है। स्थूल देश की स्वतंत्रता को 70 साल हुए और परमात्मा को आये हुए 80 वर्ष हो चुक हैं। वो हमारे अंदर घुसे हुए घुसपैठिये काम क्रोध लोभ मोह अहंकार को निकालने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं। वो हमारे लिए स्व की आज़ादी को लाने हेतु निमित्त हैं। हम जब तक इस परम रक्षक के सानिध्य में नहीं आ जाते, तब तक अपने आप को उन जंजीरों से छुड़ा नहीं सकते। स्वतंत्रता तो सच में वो है, जिसमें हमें हमारे मन से, तन से, धन से, जन से सबसे सहयोग मिले, कोई बंधन न हो। लेकिन आज हम बंधनमुक्त नहीं हैं, बल्कि पूरी तरह से बंधनयुक्त हैं। हमारा पिता हमें इस बंधन से मुक्त करने के लिए सज्ज है। बस हमें उसके सामने आना है, खड़ा होना है और समर्पण करना है सबकुछ। उसके बाद हम सभी सच्ची स्वतंत्रता को महसूस कर पायेंगे। इस जीवन में रहते हुए भी जीवनबंध से जीवनमुक्ति की तरह बढ़ जायेंगे। तो आओ इस दिवस को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने का बीड़ा उठायें।

सद्भावना से सर्व...

- पेज 12 का शेष

उत्थान के लिए मेहनतकर्ता किसानों को आधुनिकता व आध्यात्मिकता का समन्वय रखना आवश्यक है। इस क्षेत्र में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किया जा रहा भागीरथी कार्य एक खुली किताब की तरह है।

कृषि और ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. तृप्ति बहन ने कहा कि आज इस विश्व में सद्भावना की अनिवार्यता है।

कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू ने आये हुए सभी मेहमानों का हार्दिक स्वागत किया।

संगठन के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि किसान के मन में संकल्प रूपी बीज सकारात्मक हो, तो अनाज भी शक्ति प्रदान करने वाला होता है। जैविक खादों के प्रयोग से अनाज की पौष्टिकता भी उच्च गुणवत्ता वाली होती है।

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. सुषमा ने कहा कि समाज के हर तबके को मानसिक शान्ति व शक्ति प्राप्त करने के लिए राजयोग का अभ्यास करने की ज़रूरत है। राजयोग मनोबल को बढ़ाने में सहायक है।

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. गीता ने कहा कि गांव के सर्वांगीण विकास के लिए ग्राम वासियों को एकता के साथ आपसी सद्भाव, प्रेम, सुख, शान्ति आदि मूल्यों को महत्व देना चाहिए।

दिल्ली मजलिस पार्क से आईं कृषि और ग्राम विकास प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका ब्र.कु. राजकुमारी बहन ने कहा कि निर्माण के लिए मन की भावना को शुद्ध और श्रेष्ठ बना लें। शुद्ध मन से सारी दुनिया को अपनी शुभ भावना प्रदान करें।

कार्यक्रम में प्रभाग के अधिशासी सदस्य ब्र.कु. राजेन्द्र, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. किरण आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। ब्र.कु. सुनीता बहन ने सभी का आभार व्यक्त किया। ब्र.कु. सपना ने मंच का संचालन किया।